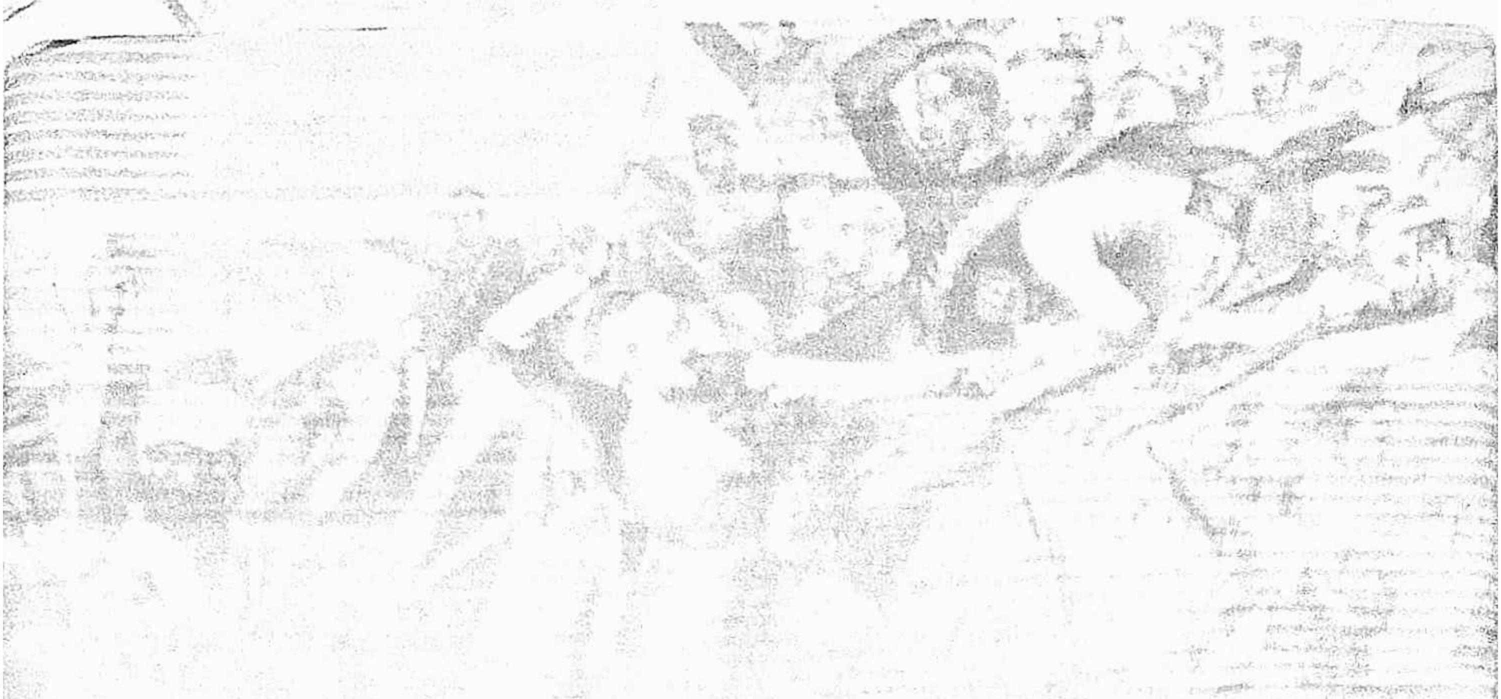

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

संपादक

डॉ. परविंदरकौर महाजन कोल्हापूरे

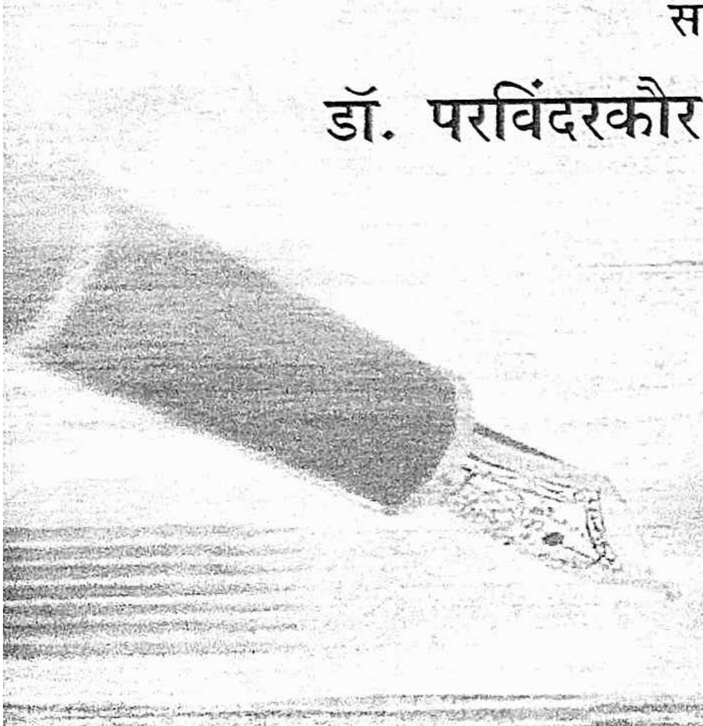

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

सं. डॉ. परविंदरकौर महाजन कोल्हापूरे

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
दिल्ली

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
के. 37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
फोन : +91 9968084132, +91 7982062594
arpublishingco11@gmail.com

BHARTIYA SWADHINTA ANDOLAN AUR HINDI SAHITYA
Edited by Dr. Parvinder Kaur Mahajan Kolhapure

ISBN : 978-93-94165-22-9

© प्राचार्य/हिंदी विभागाध्यक्ष
नेताजी सुभाषचंद्र बोस कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, नांदेड़
प्रथम संस्करण : 2023
मूल्य : ₹ 495

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग
करने के लिए संपादक व प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।
कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

अनुक्रम

1. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य 13
—चेतन गिरिधरसिंह चौहान
2. भारतेन्दु के साहित्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना 17
—डॉ. प्रा. संतोष विजय येरावार
3. स्वाधीनता आन्दोलन और महावीर प्रसाद द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय काव्य धारा 23
—डॉ. माधनुरे श्यामसुंदर
4. स्वाधीनता आंदोलन और जयशंकर प्रसाद के नाटक 28
—डॉ. शेख शहनाज अहेमद
5. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीयता 34
—डॉ. परविंदर कौर महाजन / जगतार कौर परशनसिंघ महंत
6. सुमित्रानंदन पंत के काव्य में चित्रित महात्मा गांधी 39
—डॉ. मुकुंद कवडे / डॉ. विजय पवार
7. स्वाधीनता आंदोलन और उपन्यास सम्राट 'प्रेमचंद' 45
—डॉ. कल्याण शिवाजीराव पाटील
8. स्वाधीनता आंदोलन में गजलकार कैफी आजमी का योगदान 52
—डॉ. जहीरुद्दीन र. पठान
9. स्वाधीनता आंदोलन के कथाकार-प्रेमचंद 57
—डॉ. दीपक विनायक पवार
10. स्वाधीनता आंदोलन : हिंदी लोक साहित्य 64
—डॉ. नागनाथ संभाजी वारले
11. स्वाधीनता आंदोलन का बलिदान व्यर्थ न हो 68
—डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड
12. निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना 74
—डॉ. पूनम एस शर्मा

4. स्वाधीनता आंदोलन और जयशंकर प्रसाद के नाटक

डॉ. शेख शहनाज अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्ष हुतात्मा जयवंतराव महाविद्यालय,
हिमायतनगर, जि-नांदेड (महाराष्ट्र)

आधुनिक हिंदी साहित्य में दो ऐसी महान हस्तियों का आगन हुआ जिन्होंने अपनी-अपनी विद्या क्षेत्र में उस युग को उनके नाम से जाना जाता है। आधुनिक हिंदी साहित्य में कहानी और उपन्यास की बात होती है तो वहां भारतेंदु और महावीर प्रसाद द्विवेदी युग के बाद प्रेमचंद युग से जाना जाता है। तो नाटक विद्या में नाटक और एकांकी विद्या जयशंकर प्रसाद के नाम से जानी जाती है। "प्रसाद के नाटक अपने युग की उपज है। उनमें तत्कालीन राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है, इसका विस्तृत अध्ययन किया गया है।"[1] राष्ट्रीय भाव बोध की अभिव्यक्ति प्रसाद के नाट्य विधान का मूलाधार कहा जा सकता है। इतिहास के माध्यम से राष्ट्रीय भावना के उद्दीप्त करने का सजग प्रयास उनके अधिकार नाटकों में द्रष्टव्य है। प्रसाद के नाटक भारत की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना से अनुप्रणित है। किसी भी राष्ट्र के जीवन के लिए यह चेतना अनिवार्य है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है कि, "यद्यपि प्रसाद के नाटक ऐतिहासिक है, पर उनमें आधुनिक आदर्शों और भावनाओं का आभास इधर-उधर बिखरा मिलता है, स्कन्दगुप्त और चंद्रगुप्त दोनों में स्वदेश, प्रेम, विश्वप्रेम और अध्यात्मिकता का आधुनिक रूप-रंग बराबर झलकता है। आजकल के मजहबी दंगों का स्वरूप भी हम स्कंदगुप्त में देख सकते है।"[2]

काव्य के क्षेत्र में छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभ होने के साथ प्रसादजी ने गद्य में अपनी कलम चलाकर नाटकों के क्षेत्र में एक युग स्थापित कर दिया। अभी तक जो नाटक लिखे गये उनमें राष्ट्रीयता तो थी, किंतु प्रसादजी के नाटकों में अधिक परिमाण में है। नाटकों की शुरूवात हिंदी साहित्य में भातेंदु हरिश्चंद्र ने की थी और बाद में प्रसाद ने नवीन प्रयोग कर और राष्ट्रीयता को नाटक का मुख्य तत्व

मानते हुए भारत के अतीत के गौरवमयी इतिहास का कथानक लेकर नाटकों का प्रणयन किया वो अद्‌भूत है।

राष्ट्र एक ऐसी चेतना है जो मनुष्य में इच्छा शक्ति और संवेदना उत्पन्न होती है। राष्ट्रीयता के निर्माण में मुख्य रूप से भौगोलिक एवं सांस्कृतिक एकता विद्यमान रहती है और इसका स्थुल और सुदृढ़ आधार देश की भूमि ही है। हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय में राष्ट्रीय चेतना का जो स्वरूप हमारे सामने है। वह आधुनिक युग की देन है। राष्ट्रीय चेतना मनुष्य के मन का परिष्कार करती है।

प्रसाद के नाटकों का युग यह राष्ट्रीय आंदोलनों का युग था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूरा देश, स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत था। युवक-युवतियाँ देश की गलियों में चौबारों में जनजागरण के गीत गाया करते थे। प्रभात फेरीयाँ निकाली जाती थी। इस तरह से प्रसाद अपने युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होते हुए, अपने साहित्य के द्‌वारा उन परिस्थितियों को प्रभावित भी करते है। प्रसाद ने विशाख की भूमिका में लिखा है, "मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकाण्ड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को वनाने का वहुत कुछ प्रयत्न किया है और जिन पर वर्तमान साहित्यकारों की दृष्टि कम पड़ती है।"[3] प्रसाद ने अपने नाटकों में अपने समय और देश को प्रत्यक्षतः चित्रित नही किया है, वल्कि उसे इतिहास के दर्पण में प्रतिविंवित किया है। उन्होंने वर्तमान को अतीत के शीशों में रंजित और सघन वनाकर प्रस्तुत किया है। इतिहास को अपनी अभिव्यक्ति का आधार वनाकर भी उन्होंने इतिहास की आवृत्ति नहीं की है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में प्रेम-भावना के साथ-साथ अतीत के गौरवगान द्‌वारा देशवासियों के प्रति प्रेम उत्पन्न करके लगातार संघर्ष की भूमिका बाँध दी है। जयशंकर प्रसादजी का ऐतिहासिक नाटक 'चंद्रगुप्त' का प्रसिध्द गीत :

"अरूण यह मधुमय देश हमारा,
जहाँ पहुँच अंनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा"[4]

इस पंक्ति में देश के प्रति आत्म भाव अभिव्यक्ति मिलती है। निर्मल वर्मा ठीक ही लिखते है कि, "कोई भी जाति संकट की घड़ी में अपने अतीत, अपनी जड़ो को टटोलती है। संकट की घड़ी आत्ममंथन की घड़ी है, और सही आत्ममंथन हमेशा अतीत में लिये गये फैसलों के आसपास होता है...। जिस तरह एक व्यक्ति अपनी स्मृति में दुनिया को परखता है, उसी तरह एक जाती अपनी परंपरा की आँखों से यथार्थ को छाननी है। जो लोग अतीत की स्मृति या अतीत के मूल्यांकन को अतीत के प्रति संम्मोहन का दर्जा देते है, अतीत का बोध अतीत के प्रति सम्मोहन से बहुत

भिन्न है। विगत के प्रति सम्मोहन उसी समय होता है जब हम परम्परा से विलग विगलित हो जाते है.... परम्परा का रिश्ता स्मृति से है सम्मोहन से नही।"[5]

प्रसाद के नाटक चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, आजातशत्रु, कामना विशाख आदि में राष्ट्रीयता का उद्घोश सुनाई देता है। इस दृष्टि से 'स्कंदगुप्त' और 'चंद्रगुप्त' उनकी विशिष्ट कृति है। यह उनके अन्य नाटकों से इन अर्थो में भिन्न है कि इसमें प्रसाद ने केवल राष्ट्रीयता की व्याख्या नही की अपितु उसकी गहरी संवेदना का भी स्पर्श किया। इस नाटक में स्कंदगुप्त के माध्यम से जनआंदोलन में संलग्न युवकों के मानसिक द्वंद्व को भी चित्रित किया है। स्कंदगुप्त नाटक में राष्ट्रीय संदर्भों की व्यापक व्याख्या हुई है। स्कंदगुप्त नाटक की रचना सन 1928 में हुई। वह समय स्वतंत्रता संघर्ष का समय था। संपूर्ण देश गांधी के आंदोलन में सक्रिय था अर्थात सारा देश गांधीमय हो गया था। वह समय असहयोग आंदोलन होकर लगभग दस वर्ष हो गये थे। एक तरह से यह अवसाद का काल था जो हमें स्कंदगुप्त के चरित्र में दिखाई देता है, "स्कंद की यह उदासीनता युग सत्य है जिसके माध्यम से प्रसाद यह पाठ पढ़ाना चाहते है कि स्वतंत्रता और स्वत्व की रक्षा कैसे की जाय और किसलिए की जाए। अधिकार के प्रति अनासक्ति और कर्म के प्रति जागरूकता का सामंजस्य करना प्रसाद जी भूले नहीं है।"[6]

स्कंदगुप्त में प्रसाद की राष्ट्र दृष्टि खुलकर प्रकट होती है। इस नाटक में प्रसाद भारत को एक स्वरूप प्रदान करते दिखाई देते है। यह टुकड़े में विभक्त नहीं है अपितु इसका विस्तार कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी एक है। वैदिक काल से ही राष्ट्र शब्द का प्रयोग होता रहा है। राष्ट्र की परिभाषाएँ समय-समय पर बदलती रही है, किन्तु राष्ट्र और राष्ट्रीयता का भाव गुलामी के दौरान अधिक पनपा। जो साहित्य के माध्यम से हमारे समक्ष आया जिसके द्वारा राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ। साहित्य का सीधा संबंध समाज से है। जो इस रूप में सीधे समाज को प्रभावित करता है। प्रसादजी ने देशवासियों में आत्मगौरव और राष्ट्रीय भावना जगाने के लिए भारत के स्वर्णीम अतीत को नाटकों का विषय बनाकर साहित्य का गौरव बढ़ाया। इनके नाटकों में ऐतिहासिक चेतना, इतिहास और कल्पना का सुंदर सामंजस्य दार्शनिक गंभीरता और साथ ही काव्यात्मक सरसता, तथा देशकाल का सजीव चित्रण हुआ है। प्रसादजी के नाटकों की अनेक विद्वानो ने प्रशंसा की है। डॉ. नगेंद्र लिखते हैं, "प्रसाद की ट्रेजडी की भावना, उनकी सांस्कृतिक पुनरूत्थान की चेतना, उनके महान कोमल चरित्र, उनके विराट मधुर दृश्य, उनका काव्य स्पर्श हिंदी में तो अद्वितीय है ही, अन्य भाषाओं और नाटकों की तुलना में भी उनकी ज्योति मलिन नहीं पड़ सकती।"[7]

टपनी मर्मस्पर्शी प्रतिभा द्वारा प्रसादजी ने समझ लिया कि अंतर्विरोधी राजकीय सत्ता, सामन्तीय परिपाटी एवं साम्राज्यवाद की दीवारें टूट रही है। नवीन मानवतावादी भावना उग रही है। प्रसादजी ने अपने नाटकों की अन्य विशेषताओं के साथ उनके नाटकों में अपने युग की समस्या का प्रतिबिंब भी है। प्रसादजी की राष्ट्रीयता के संदर्भ में बच्चन सिंह जी कहते हैं कि, "इनकी राष्ट्रीयता राजाओं और सरदारों तक सीमित नहीं है, वह ऐसी राष्ट्रव्यापी चेतना है जो देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपने में समाहित कर लेती है। दूसरी इनकी राष्ट्रीयता में विश्वमैत्री समन्वित है। यही कारण है कि स्थान-स्थान पर मानव मैत्री का उद्घोष हुआ है।

स्कंदगुप्त में भी देश को पराधीनता से मुक्ति दिलाने का उद्घोष सुनाई पड़ता है। इस नाटक के प्रायः सभी पात्र स्कंदगुप्त, देवसेना, बंधुवर्मा, पर्णदत्त, मातृगुप्त, शर्वनाग, कमला, जयमाला, रामा इत्यादि प्रसाद की राष्ट्रनीति का परिचय देते हैं। इन पात्रों के माध्यम से ही स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे युवकों को प्रेरणा देते हुए प्रसाद 'जयमाला' के माध्यम से कहलवाते है, "स्त्रियों की, ब्राह्मणों की पीड़ितों और अनाथों की रक्षा में प्राण विसर्जन करना क्षत्रिय धर्म है। एक प्रकार की ज्वाला अपनी तलवार से फैला दो। भैरव ने श्रृंगीनांद के समान प्रवल हुंकार से शत्रु का हृदय कंपा दो....वीर! बढ़ो गिरे तो मध्याह्न के भीषण सूर्य के समान-आगे पीछे, सर्वत्र आलोक उज्ज्वलता रहे।"[8]

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नारियों की सहभागिता सुनिश्चित करने और राजनीतिक सक्रियता लाने हेतु महात्मा गांधी की भाँति नाटककार जयशंकर प्रसाद ने यह स्पष्ट किया है कि नारियों को घर की चार दीवारी से बाहर लाना आवश्यक है। उन्होंने अपने नाटकों में आग से खेलनेवाली राजनीतिक सूझबूझ से सम्पन्न अनेक नारियों का चित्रण किया है। 'चंद्रगुप्त' नाटक की 'अलका' वीर क्षत्राणी बनकर अपने स्वतंत्र नारी व्यक्तित्व का परिचय देती है। चंद्रगुप्त और चाणक्य के साथ मिलकर देश की रक्षा के लिए वह नटी का रूप धारण करती है, पर्वतेश्वर के बंदीगृह में चाणक्य से संकेत पाकर वह पर्वतेश्वर की प्रणयिनी बनने की राजनीति खेलती है। प्रसाद के नाटकों का मूल उद्देश्य सांस्कृतिक चेतना जागृत करना, नारी अस्मिता को स्थापित करना और राष्ट्रीय भावनाओं को जन-जन तक पहुँचाना रहा है।

प्रसाद को यह ज्ञात था कि यदि देश की संस्कृति समाप्त हो गई तो, देश स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। राष्ट्र के निर्माण में जो सबसे महत्वपूर्ण तत्व है वह संस्कृति ही है। संस्कृति को राष्ट्र की आत्मा का दर्जा दिया जा सकता है। ब्रिटिश पराधीनता के समय हमारे देश के प्रबुध्द वर्ग को यह भली-भाँति ज्ञात था कि

अंग्रेजों की पहली प्राथमिकता भारतीय संस्कृति को नष्ट करने की थी। इसलिए भारतीय मनीषियों ने अपने साहित्य सृजन द्वारा भारतीय संस्कृति की पुनःप्रतिष्ठा की, उसके प्रति राग उत्पन्न किया। राष्ट्र दृष्टि, देश की संस्कृति, राजनीति और भूगोल एवं इतिहास से मिलकर बनती है। प्रसाद ने अपने साहित्य में देश की राजनीतिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति और भौगोलिक स्थिति एवं ऐतिहासिक स्थिति का चित्रण है। राजनीतिक स्थिति में वे आर्यावर्त का स्वप्न देखते है, जो मानव और मागध के संगठन व एकता से ही संभव हो सकता है। सांस्कृतिक स्थिति में वह भारतीय संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। 'चंद्रगुप्त' नाटक में कार्नेलिया कहती हैं, "अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि है, भारत मानवता की जन्मभूमि है।"[9] नाटकों के नारी पात्रों के माध्यम से उन्होंने व्यापक रूप में राष्ट्रीय चेतना का संदेश दिया है। उनके सभी प्रमुख नाटकों में नारी के गौरवमय राष्ट्रीय स्वरूप के भव्य दर्शन होते हैं। 'चंद्रगुप्त' नाटक की 'अलका' सिक्युकस के समय अपने राष्ट्रप्रेम का परिचय देती हुई कहती हैं कि "मेरा देश है मेरा पहाड़ है, मेरी नदियाँ और जंगल है, इस भूमि के एक-एक परमाणु मेरे है और मेरे शरीर के एक-एक क्षुद्र अंश उन परमाणुओं से बने हैं।"[10] 'स्कंदगुप्त' की जयमाला, 'अजातशत्रु' की मल्लिका, 'चंद्रगुप्त' की मालविका; स्कंदगुप्त की रामा, देवसेना, आदि में राष्ट्रीयता की भावना नस-नस में व्याप्त है। जातीय गौरव, राष्ट्रीय प्रेम, और विश्व कल्याण की कामना को स्थापित करने में प्रसाद के नाटकों की नारियाँ उल्लेखनीय है।

राष्ट्र को दिशा देने में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जिस देश का युवा तत्पर एवं जागरूक नही होता वह देश कभी प्रगती नहीं कर सकता है। प्रसाद अपने देश के युवाओं में फैली उदासीनता से भी खिन्न दिखाई देते हैं। युवाओं को जागरूक करने का कार्य भी प्रसादजी ने अपने नाटकों को माध्यम से किया है। प्रसाद ने विलासिता में डूबे हुए युवाओं को कोसा है। जो देश की वर्तमान स्थिति के प्रति उन्मुख नही है। पर्णदत्त के माध्यम से युवाओं को धिक्कारते हुए कहते हैं, "नीच, दुरात्मा, विलास का नारकीय कीडा। बालों को संवारकर, अच्छे कपड़े पहनकर अब भी घमंड से तना हुआ निकलता है। कुलवधुओं का अपमान सामने देखते हुए भी अकड़कर चल रहा है, अब तक विलास और नीच वासना नहीं गयी। जिस देश के नवयुवक ऐसे हों, उसे अवश्य दूसरों के अधिकार में जाना चाहिए। देश पर यह विपत्ति, फिर भी यह निराली धज!"[11] युवाओं की इसी उदासीनता को प्रसाद, स्कंदगुप्त के माध्यम से कर्मक्षेत्र की ओर प्रेरित करते हैं। जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाने पर जोर देते हं।

राष्ट्रीय भावना से भरपूर प्रसाद जी के नाटक राष्ट्र दृष्टि की समुचित व्याख्या

करते है। प्रसाद भारतवर्ष की संपूर्ण परिकल्पना प्रस्तुत करते हुए सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टि से राष्ट्र के विभिन्न तत्वों की समीक्षा करते हैं। उनकी राष्ट्र में स्पष्टता है। उनकी संस्कृति के प्रति बहुत श्रध्दा है। संस्कृति उनकी राष्ट्रदृष्टि में मूल है। उनका मानना है कि बिना संस्कृति के राष्ट्र दृष्टि नही बन सकती। संस्कृति से परंपराएँ बनती है और यही परंपरा आधुनिकता की आधार शिला है। प्रसाद विभिन्नता में एकता के समर्थक है। अपने नाटकों में उन्होंने यही दृष्टिकोन रखा है। अपने नाटकों के पात्रों एवं संपादों से जनता में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। प्रायः इन नाटकों के चरित्र देष की आन, बान और शान की खातिर अपने प्राणों का बलिदान देते हुए नजर आते है। व्यक्ति बड़ा नही, महान नही है, बल्कि राष्ट्र महान है, का संदेश देते हैं हुए इनके नाटकों में अतीत का गौरव, राष्ट्रीय चेतना एवं देशभक्ति का स्वर-प्रधान है। प्रसाद के नाटक स्वाधीनता संग्राम में भारतीय संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक रहे है। प्रश्न आज और आगामी कल के लिए उनकी प्रासंगिकता का है। प्रो. शिलीमख ने लिखा था, " 'स्कंदगुप्त' तब तक बराबर सामायिक रहेगा जब तक भारत का स्वातंत्र्य युध्द सफल नही होता। उसके बाद वह हमारे इस युध्द के इतिहास का एक उज्ज्वल अंग समझा जाएगा।"[12] जब तक रह देश अपनी स्वाधीनता के प्रति सजग रहेगा, तब तक इस विशाल देश में अनेक राज्य होंगे, अनेक धर्म और संप्रदाय रहेंगे, जब तक देश के लिए बलिदान होने की आवश्यकता रहेगी, तब तक प्रसाद के नाटक भारतीयों में प्रेरणा जागृत करते रहेंगे।

संदर्भ

1. गद्यकार प्रसाद, पृ. 209
2. पत्थर की पुकार-जयशंकर प्रसाद-संजय प्रकाशन-वाराणसी 1947, पृ. 45
3. जयशंकर प्रसाद-विशाख की भूमिका से
4. जयशंकर प्रसाद, चंद्रगुप्त
5. साहित्यिक निबंध, डॉ. गणपति चंद्रगुप्त, पृ. 737 और 738
6. गौतम रमेश, प्रसाद के नाटक, पृ. 108
7. शोधगंगा-भारतेंदु और प्रसाद युगीन सहोटी में राष्ट्रीय चेतना
8. जयशंकर प्रसाद-स्कंदगुप्त-राजकमल पेपर बैक्स-आवृत्ति-2010, पृ. 49
9. वही, पृ. 134
10. वही, पृ. 138
11. वही, पृ. 151
12. प्रसाद का जीवन दर्शन-कला और कृतित्व-मधुरेश-वाणी प्रकाशन, पृ. 380